B.A. - III Philosophy (Hons)

Paper - III

Ethics

— Dr. Ram Narain Mi...

नीति शून्य कर्म (Non-moral action)

बहुतेरे ऐसे कर्म होते हैं जिन्हें न पाप और ना ही पुण्य, न धर्म और न हि अधर्म की श्रेणी में रखा जा सकता है। वे नैतिकता के क्षेत्र के बाहर हैं। उनका नैतिक निर्णय नहीं हो सकता। वे नैतिकता के गुणों से रहित होते हैं। ऐसे कर्मों को नीति शून्य कर्म कहते हैं। नीति शून्य का अर्थ यह नहीं है कि ऐसे कर्म खराब कर्म होते हैं। इनमें इच्छा / संकल्प का अभाव रहता है इसलिए इनके विषय में कोई नैतिक निर्णय नहीं दिया जा सकता।

अब प्रश्न है कि ऐसे कौन से से कर्म हैं जो ~~नैतिक~~ नैतिक शून्य कहे जाते हैं।

Scanned By KagazScanner

निम्न प्रकार के कर्म नीतिशून्य कर्म की श्रेणी में आते हैं-

प्रथम- निर्जीव पदार्थों की क्रियाओं का नैतिक निर्णय नहीं होता क्योंकि इनमें इच्छा संकल्प अथवा आत्म-चेतना का अभाव पाया जाता है। अतः ये नीतिशून्य कर्म हैं- बादल से समय पर पानी न बरसने, सूर्य से जाड़े में गर्मी होने की या गर्मी में ठंड होने को उचित-अनुचित की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इसी प्रकार प्राकृतिक घटनाएँ/आपदाएँ नीतिशून्य घटना/कर्म के अन्तर्गत आती हैं।

दूसरा,

पौधे, पशुओं या गैर मानव जन्य क्रियाएँ भी नीतिशून्य कार्य के अन्तर्गत आते हैं। पेड़ का किसी भवन पर गिर जाना अथवा कुत्ते को किसी को काट लेना भी नैतिक कर्म के अन्तर्गत नहीं आता है।

Scanned By KagazScanner

तीसरा,

मनुष्य की आकस्मिक और अनुकरण-जन्य क्रियाएँ भी नीति शून्य है क्योंकि ऐसी क्रियाएँ जान कर या विचार करके नहीं की गई होती है। इनमें भी आत्म-चेतना और संकल्प स्वातंत्र्य का अभाव होता है।

चौथा,

मनुष्य की वैसी क्रियाएं जो मानसिक विकार के कारण हुई हो। इनमें पागलों, मंदबुद्धि, अथवा बालकों द्वारा किए गए कार्य आते है। इनके कार्यों को भी नैतिक मूल्यांकन के दायरे में नहीं लाया जा सकता क्योंकि। उन्हें जो कर्म किए गए होते है उनके विषय में कोई जानकारी नहीं होती या ये दूसरे के प्रभाव में आकर किए गए होते है। अतः उन्हें इन कर्मों के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। अतः वे नीति शून्य कार्य की श्रेणी में आते है।

Scanned By KagazScanner

छठवां

ऐसे कर्म जो किसी के द्वारा भय, लालच, या किसी प्रलोभन वश किया गया हो। यदि किसी व्यक्ति के द्वारा ऐसे कार्य करवाया जाता है तो कर्म करने का अन्तिम उत्तरदायित्व कर्ता पर नहीं होगा। ऐसे में उसके द्वारा किए गए कार्य का नैतिक मूल्यांकन भी नहीं किया जायेगा। क्योंकि ऐसे कर्मों में आत्म चेतना का नितांत अभाव होता है।

सातवां

सम्मोहित अवस्था में किए गए आदेशों के फलस्वरूप यदि कोई कार्य किया जाता है तो ऐसा कर्म भी नीति शून्य होता है क्योंकि इसमें भी कर्ता का आत्म स्वातन्त्र्य नहीं होता।

इसके अतिरिक्त सभी ऐच्छिक कर्म जैसे, खांसना, छींकना, पलक झपकाना मूत्र विसर्जन आदि जैसे कार्य

Scanned By KagazScanner